अध्यक्ष डिएटर एफ. उकडोर्फ़ द्वारा
प्रथम अध्यक्षता में द्वितीय सलाहकार

केवल विश्वास द्वारा जीया जा सकता है

रब्बी और साबुन बनाने वाला

साबुन बनाने वाले की एक प्राचीन यहूदी कथा है जो परमेश्वर में विश्वास नहीं रखता था । एक दिन जब वह रब्बी के साथ जा रहा था, वह बोला, यहां पर कुछ ऐसा है जो मेरी समझ में नहीं आता । हमारे पास हजारों सालों से धर्म है । परन्तु हर जगह आप बुराई, भ्रष्टाचार, बईमानी, अन्याय, पीड़ा, भूख, और दंगे देखते हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि धर्म संसार को सुधार ही नहीं पाया । इसलिये मैं आप से पूछता हूं, यह धर्म किस काम का"

रब्बी ने कुछ समय तक जवाब नहीं दिया लेकिन साबुन बनाने वाले के साथ चलता रहा । आखिरकार वे एक खेल के मैदान पर पहुंचे जहां बच्चे, धूल में लत-पत, मिट्टी में खेल रहे थे ।

"यहां पर कुछ ऐसा है मैं समझ नहीं पा रहा हूं," रब्बी कहता है । "उन बच्चों को देखो । हमारे पास हजारों साल से साबुन है, और अभी तक वे बच्चे गंदे है । साबुन किस काम ?"

साबुन बनाने वाले ने जवाब दिया, "लेकिन रब्बी, इन गन्दे बच्चों के लिए साबुन को दोषी ठहरना ठीक नहीं है । साबुन को पहले इस्तेमाल करना होता है तब ही यह अपने उदेश्य पर पूरा कर सकता है ।"

रब्बी मुस्कुराया और बोला, "बिलकुल ठीक ।"

हम कैसे जीवित रहेंगे ?

प्रेरित पौलुस, पुराने नियम के एक भविष्यवक्ता का संदर्भ करते हुए, संक्षिप्त करता कि विश्वासी होने का क्या मतलब होता है जब उसने लिखा, "विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा" (रोमियों 1:17)।

शायद इस साधारण से कथन में हम धर्म के बीच के अंतर को समझेंगे एक जो कि कमजोर और प्रभावहीन है और एक जिसमें जीवनों को बदलने की सार्मथ है ।

परन्तु यह समझना कि विश्वास द्वारा जीने का क्या अर्थ होता है, इसके लिये हमें समझना चाहिए कि विश्वास क्या है ।

विश्वास भरोसे से कहीं अधिक है । यह कर्म के जरिए परमेश्वर में पूरा विश्वास है ।

यह मात्र चाहने से कहीं अधिक है ।

यह मात्र बैठे रहेना, अपना सिर हिलना, और कहना हम सहमत हैं से कहीं अधिक है । जब हम कहते हैं "धर्मी विश्वास द्वारा जीवित रहेगा" हमारा मलतब होता है हमारा मार्गदर्शन और हमारा निर्देशन हमारे विश्वास द्वारा होता है । हम इस तरह से *कार्य* करते हैं जो कि हमारे विश्वास के अनुरूप होता है—न कि विचारहीन आज्ञाकारिता की भावना के कारण बल्कि हमारे स्वर्गीय पिता के प्रति निश्चित और निष्ठावान प्रेम और अपने बच्चों को प्रकट किये गये उनके अनमोल ज्ञान के कारण ।

कर्म सहित विश्वास होना चाहिए; अन्यथा यह मरा हुआ है (देखें याकूब 2:17) । यह विश्वास बिलकुल नहीं हो सकता । इस में एक को भी बदलने की शक्ति नहीं हो सकती, संसार को बदलना तो दूर की बात है ।

विश्वासी पुरुष और स्त्रियां अपने कृपालु स्वर्गीय पिता में भरोसा करते हैं—कठिन समयों में भी, संदेह और विपत्ति के समयों के दौरान भी जब वे परिपूर्णता से देख या स्पष्टरूप से समझ नहीं पाते हैं ।

विश्वासी पुरुष और स्त्रियां ईमानदारी से शिष्यता के मार्ग पर चलते हैं और अपने प्रिय उद्धारकर्ता के उदाहरण का अनुसरण करने का प्रयत्न करते हैं । विश्वास प्रोत्सहित करता है और, वास्तव में, हमें हमारे हृदयों को स्वर्ग की ओर झुकने और वहां तक पहुंचने की प्रेरणा देता, ऊपर उठाता, और हमारे साथियों को आशीषित करता है ।

धर्म बिना कर्म उस साबुन के समान जो डिब्बे में बन्द रहता है । इस में चमत्कारिक क्षमता होनी चाहिए, लेकिन वास्तव में इसमें बदलाव लाने की कम शक्ति होती है जबतक यह अपने अपेक्षित उद्देश्य को पूरा नहीं करता । यीशु मसीह

का पुनःस्थापित सुसमाचार कर्म करने का सुसमाचार है । आत्मिकरूप से तथा संसारिकरूप से दूसरों की सहायता करने सहित यीशु मसीह का गिरजा आशा, विश्वास, और उदारता के संदेश के रूप में सच्चे धर्म की शिक्षा देता है ।

कुछ महीनों पहले, मेरी पत्नी, हेरियट, और मैं एक पारिवारिक भ्रमण पर अपने कुछ बच्चों के साथ भूमध्यसागरीय क्षेत्र पर गए थे । हम कुछ शरणार्थीयों के शिविरों में गए और युद्ध से ध्वस्त देशों के परिवारों से मिले थे । वे लोग हमारे विश्वास के नहीं थे, लेकिन वे हमारे भाई और बहन थे और उन्हें तत्कालीन मदद की आवश्यकता थी । हमारे हृदय गहनता से प्रभावित हुए थे जब हमने अनुभव किया कि कैसे हमारे गिरजे के सक्रिय सदस्यों ने जरुरत में पड़े अपने संगी-साथियों को उनके धर्म, राष्ट्रीयता, या शिक्षा पर ध्यान दिये बिना सहायता, राहत, और आशा देने में पहल की थी ।

अनुकूल कर्म विश्वास के साथ मिलकर हृदय को दया, मन को विवेक और समझ, आत्मा को शांति और प्रेम से भर देता है ।

हमारा विश्वास उन्हें जो हमारे आस-पास हैं और हमें, दोनों को आशीषित और धार्मिकता से प्रभावित कर सकता है ।

हमारा विश्वास संसार को अच्छाई और शांति से भर सकता है ।

हमारा विश्वास घृणा को प्रेम में और शत्रुओं को मित्रों में बदल सकता है ।

धर्मी तब, विश्वास में कर्म करते हुए जीते हैं; वे परमेश्वर पर भरोसा करते हुए और उसके मार्ग पर चलते हुए जीते हैं ।

और यह ऐसा विश्वास है जो व्यक्तियों, परिवारों, राष्ट्रों, और दुनिया को बदल सकता है ।

इस संदेश से शिक्षा

अध्यक्ष उकडोर्फ समझाते है कि विश्वास किसी भी भरोसे की अभिव्यक्ति से कहीं अधिक है । स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह में सच्चे विश्वास को कर्म करने की आश्वयकता है, और विश्वास के द्वारा जीना जीवनों और घरों को बदलने क क्षमता रखता है । जिन्हें आप सीखाते हैं उन्हें उन क्षणों को बांटने के लिए आंमत्रित कर सकते हैं जब उन्होंने विश्वास के द्वारा जीने की क्षमता और आशीषों को देखा हो---या तो स्वयं के उदाहरणों से या किसी अन्य के विचारों से । उन्हें पथप्रदर्शन की प्रार्थना करने के लिए प्रोत्सहित करें कि कैसे सुसमाचार को बेहतर तरीके से जीना है ।

युवा

विश्वास में दूसरों की सेवा करना

अध्यक्ष उकडोर्फ हमें बताते हैं कि परमेश्वर में हमारा विश्वास *अवश्य ही* "कर्म के द्वारा होना" है । जब हमारा विश्वास "अनुकूल कर्म के साथ होता है," वह समझाते है, यह "आत्मा को शांति और प्रेम से ... भर" देता है । इस आशीष की प्रतिज्ञा के साथ, हम बदलाव कर सकते हैं, और हम इसे अपने जीवनों में देख सकते हैं यदि हम कुछ समय निकालकर विश्वास से भरकर सेवा करें । आपको हर सुबह दूसरों की सेवा करने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए । उदाहरण के लिये, उनसे आपको दिखाने के लिए पूछें जब आपके भाई-बहन को प्रतिदिन के कार्य में मदद की जरुरत हो या जब एक मित्र को प्रशंसा की जरुरत हो । तब, जब आपको प्रेरणा प्राप्त हो उसपर काम करें ! यदि आप इन प्रार्थनाओं और इस सेवा को एक आदत बनाते हैं, तब आपके विश्वासपूर्ण, अनुकूल कर्म करने से आप के जीवन और दूसरों के जीवनों को आशीषित होंगे । अध्यक्ष उकडोर्फ वादा करते हैं कि आप "व्यक्तियों, परिवारों, राष्ट्रों, और संसार को बदल सकते हैं ।"

बच्चे

भरोसा

इस गतिविधि को मित्र के साथ करने की कोशिश करें । आपको उनके निर्देशनों का भरोसे के साथ ध्यानपूर्वक अनुसरण करना होगा ।

एक कोरा कागज ले और उसपर एक गोला घेरा बनाएं जो चेहरे जैसा दिखता हो । अपने हाथ में पेन या पेंसिल ले, अपनी आखों को बंद करें । आपका मित्र आंखें, नाक-कान, मुहं, और बाल कहां बनाना है बताएगा । तब एक नजर डालें । कि कैसा बना है ? आप चेहरे पर रंग करें और एक दूसरा गोला बनाकर दोबारा से खेंले !

कभी-कभी निर्देशन का अनुसरण करना कठीन होता है । लेकिन जब हम पवित्र आत्मा द्वारा सुनकर अनुसरण करने का प्रयत्न करते हैं, तब वह हमारी मदद करेगा । हम हमेशा उसपर भरोसा कर सकते हैं ।

© 2017 द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित • । भारत में छपी । अग्रेंजी अनुमति • • 6/16 • • । अनुवाद अनुमति • • 6/16 • • • 97924 294 • का अनुवाद

पौरोहित्य के शपथ और अनुबंध

प्रार्थनापूर्वक इस सामग्री का अध्ययन करें और क्या बांटना है के लिए प्रेरणा पाने को खोजें । कैसे सहायता संस्था के उद्देश्य को समझना परमेश्वर की बेटियों की अनंत जीवन की आशीषों के लिए तैयार करेगा ?

विश्वास परिवार सहायता

जितना अधिक हम बहनों के रुप में समझती हैं कि पौरोहित्य के शपथ और अनुबंध हम पर व्यक्तिगत तौर से लागू होते हैं, उतना अधिक हम पौरोहित्य की प्रतिज्ञाओं और आशीषों का अंगीकार करेंगी ।

बाहर प्रेरितो के परिषद के एल्डर एम. रसल बलार्ड ने कहा था, “वे सभी जिन्होंने प्रभु के साथ पवित्र अनुबंध बनाएं हैं और जो उन अनुबंधों का आदर करते हैं व्यक्तिगत प्रकटीकरण पाने, स्वर्गदूतों की सेवा द्वारा आशीषित होने, परमेश्वर के साथ बातचीत करने, सुसमाचार की पूर्णता प्राप्त करने के योग्य हैं, और, आखिरकार, वे सभी यीशु मसीह के साथ उस सब के उत्तराधिकारी होंगे जो हमारे पिता के पास है ।”[1]

पौरोहित्य के शपथ और अनुबंध की आशीषों और प्रतिज्ञाओं का संबंध पुरूषों और स्त्रियों दोनों से है । सहायता संस्था की जनरल अध्यक्षता में पूर्व सलाहकार, बहन शेरी एल. डियू, कहती हैं, “पौरोहित्य की परिपूर्णता में निहित प्रभु के घर की उच्चतम विधियां केवल पुरूष और स्त्री द्वारा मिलकर ग्रहण की जा सकती हैं ।”[2]

सहायता संस्था की जनरल अध्यक्षा, बहन लिंडा के. बर्टन, ने यह निमंत्रण दिया है, • “मैं आपको पौरोहित्य के शपथ और अनुबंध को रटने के लिए आंमत्रित करती हूं, जो सिद्धांत और अनुबंध 84:33-44 में मिल सकता है । ऐसा करने से, मैं वादा करती हूं कि पवित्र आत्मा पौरोहित्य में आपकी समझ को बढ़ाएगी और आपको अद्भुत तरीकों से प्रेरित करेगी और ऊंचा उठाएगी ।”[3]

सहायता संस्था को जोसफ स्मिथ के निर्देशन स्त्रियों को "पौरोहित्य के लाभ एंव आशीषों एंव उपहारों के नियंत्रण में आने" की तैयारी के लिये थे । इसे मंदिर की विधियों के माध्यम से प्राप्त किया जाएगा ।

“मंदिर विधियां पौरोहित्य विधियां • [होती हैं], परन्तु ये पुरुष या स्त्री को गिरजे के पद प्रदान नहीं करती हैं । प्रभु की प्रतिज्ञा को [ये विधियां परिपूर्ण करती हैं] कि उसके लोग--स्त्री और पुरुष—'स्वर्ग की सामर्थ के साथ संपन्न होंगे' [सिऔरअनु 38:32] ।” [4]

अतिरिक्त धर्मशास्त्र और जानकारी

सिद्धांत और अनुबंध • • 84:19–40; 21:45–46; reliefsociety.lds.org

टिपण्णीयां

1. M. Russell Ballard • • • • “Men and Women and Priesthood Power,” *Liahona,* सितं . 2014, 36 ।

2. M. Russell Ballard • • • • “Men and Women and Priesthood Power,” *Liahona,* सितं . 2014, 36 ।

3. Linda K. Burton • • • “Priesthood Power—Available to All,” *Ensign,* जून 2014, 39–40 ।

4. Gospel Topics, “Joseph Smith’s Teachings about Priesthood, Temple, and Women,” topics.lds.org ।

इस पर विचार करें

पौरोहित्य के शपथ और अनुबंध की प्रतिज्ञा की गई आशीषों को पूर्णरूप से समझने और पाने के लिये आप क्या कर सकती हैं ?

© 2017 द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमति 6/16 । अनुवाद अनुमति 6/16 97924 294 का अनुवाद